

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम..... *The Tribune*.....
दिनांक..... ११. २०१९ पृष्ठ सं..... २ कॉलम..... ७-८

18-MEMBER GROUP VISITS HAU

Hisar: An 18-member group (16 students and two faculty members) from ST Pavlodar State University, Kazakhstan, visited Chaudhary Charan Singh Haryana Agriculture University (HAU), Hisar, to attend a short-term international internship programme under the student exchange programme. During this meeting, detailed discussion was held on the functioning of different departments of the university. Prof KP Singh, Vice-Chancellor, HAU, told the visiting group that the university has initiated the process of cooperation with prestigious academic and research institutions within and outside the country to boost academic and research pursuits.

लोक संपर्क कार्यालय

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम.....
दिनांक..... ७. ११. २०१९

फैनेंड जागरूक

पृष्ठ सं... 2

कॉलम ।-३

बढ़ती जनसंख्या दोगुनी रपतार से कृषि भूमि को कर रही कम

ैनवर शर्मा = हितर

विश्व में बढ़ती जनसंख्या दोगुनी रपतार से कृषि भूमि कम करती जा रही है और ऐसा विश्व में हर देश के साथ हो रहा है। सिर्फ वह नहीं बल्कि इसका प्रभाव लोगों के जीवन से लेकर स्वास्थ्य तक पर पड़ रहा है। वह बात अमेरिका की बूनिवर्सिटी ऑफ मेसाचूसेट से प्रख्यात वैज्ञानिक ब्रॉओशेन जिंग ने कही। वह बुधवार को चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्वर्ण जयती अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पहुंचे थे।

जिंग ने विश्व में कृषि की समस्याओं व मृदू के बिंबाही स्थिति पर अपनी रिसर्च साझा करते हुए बताया कि उनकी रिसर्च में तीन बड़े कारण सामने आए जिसकी बजाए से विश्व में लोग खटारे की तरफ बढ़ रहे हैं। उन्होंने बताया कि इस सब को योकना है तो हमें अपने स्वास्थ्य से पहले मिट्टी के स्वास्थ्य की चिंता करनी होगी। इसके समाधान के लिए उन्होंने बौद्धिक एवं नवा रास्ता बताया। सम्मेलन में 20 देशों के 100 से अधिक वैज्ञानिक और 600 शोधार्थी कृषि के भविष्य और चुनौतियों पर अपने शोध प्रस्तुत करेंगे।

न्यू मिलेनिया एग्रीकल्चर नॉथल ट्रैडस एंड फूद्यूचर सिनेरियो विषय पर तीन दिन तक विभिन्न वैज्ञानिकों द्वारा रिसर्च प्रस्तुत की जाएंगी। कार्यक्रम की आयोजिता कुलपति प्रो. केपी सिंह ने की। उन्होंने बताया कि हम तीन दिवसीय सम्मेलन में पहुंचे 20 देशों के वैज्ञानिकों की मदद से एक रिपोर्ट तैयार कर रहे हैं जो भारत सरकार के साथ-साथ ग्लोबल आर्जनजेशन को भी बेजी जाएगी, ताकि भविष्य की नीतियों में इन प्रबन्धानों को शामिल किया जाए। सम्मेलन में कनाडा के मेंटेक विविक के प्रोफेसर कोलेनस जे सर्वेन, आइसोप्टर्स एवं आर के पर्व डीडीजी प्रो. गजेन्द्र मुख्य रूप से उपसंचयत रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्वर्ण जयती अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पुस्तक विमोचन करते मुख्यमंत्री डा. बांओशेन जिंग, कुलपति प्रो. केपी सिंह व अन्य।

तीन कारण, जिसकी वजह से स्वास्थ्य हो रहा प्रभावित

एयांदरण में बदलाव

कभी बांओशेन से आई बाढ़ तो कभी सुखे जैसे हालात, पर्यावरण से विश्व के कई देश हर दौर ऐसी परिस्थितियों से गुजर रहे हैं। पर्यावरण में विभिन्न कारणों से आ रहे ऐसे बदलाव सिर्फ किसानों के प्रोडक्शन को ही प्रभावित नहीं कर रहे बल्कि मिट्टी को भी उतना भी नुकसान पहुंचा रहे हैं। पर्यावरण में बदलाव के कारणों को जानकर विश्व समुदाय को मिशन मोड में सुधार के लिए इस पर काम करना होगा।

प्रदूषकों का निर्वहन

फसलों की न्यूट्रिएट देने के लिए कैमिकल फाटिलाइजर आदि का प्रयोग किया जाता है। उन्हें यह न्यूट्रिएट जमीन में नीचे ले जा रहे हैं और भूमि जल की भी प्रदूषित कर रहे हैं। इन सभी प्रक्रियाओं से जब प्रोडक्ट तैयार होता तो आप अंदाजा लगा सकते हैं मानव स्वास्थ्य पर उसका क्या प्रभाव होगा।

जनसंख्या बढ़ाती है

1960 में विश्व की कुल जनसंख्या 3.03 अरब ही, 2008 तक यह 6.76 अरब हो गई और अब यह दोगुनी तेजी के साथ बढ़ रही है। इसका रीवा असर कृषि भूमि के क्षेत्रफल पर पड़ रहा है। 1961 में कुल कृषि भूमि 1368 करोड़ हेक्टेयर थी तो 2008 में 1527 करोड़ हेक्टेयर हुई मगर अब जनसंख्या बढ़ने के

साथ प्रति व्यक्ति कृषि भूमि दोगुनी रपतार से कम हो रही है। अगर जनसंख्या और कृषि योग्य भूमि की तुलना करें तो कृषि भूमि में सिर्फ 12 फीसदी की ही बढ़ातरी हुई है। प्राकृतिक संसाधनों पर भानव व पशु-संख्या का भारी दबाव है जिसके लिए यहां आपृति करना कृषि वैज्ञानिकों के लिए एक चुनौती बन गया है।

हमारे स्वास्थ्य पर यह पड़ रहा प्रभाव

* प्रदूषित भूमि से जब खाद्य पदार्थ हमारी शाली में पहुंचे तो वह शीमारियों के सिद्धाय कुछ नहीं देंगे। यही कारण है कि तोगों की लगातार औसत उम्र कम हो रही है। कैसर, डायबिटीज, बीपी जैसी शीमारियों हो रही हैं। रंग, आकार में भी परिवर्तन देखा जा सकता है।

* बांओशेन जिंग बताते हैं कि कृषि एंड एग्रीकल्चर आर्जनाइजेशन की 2018 की रिपोर्ट के अनुसार दीन में 19.4 फीसद कृषि भूमि प्रदूषण से प्रभावित है, यूरोपियन इकॉनोमिक परिया में तीन करोड़ प्रदूषित साइट्स हैं व यूरोप में 1300 से अधिक साइट्स ऐसी हैं जहां जमीन प्रदूषित है।

यह बताया समाधान

इसके समाधान के लिए वैज्ञानिक जिंग ने बौद्धिक वर्कर के उपयोग बताया। बौद्धिक वर्कर के उपयोग से मृदा की जलवायरण क्षमता में 9.82 फीसद तक बढ़ातरी पाई गई है। इससे मिट्टि

होता है कि भविष्य में जल संरक्षण के लिए कृषि तकनीक में बौद्धिक वर्कर का इस्तेमाल लाभदायक साबित होगा। इसके अलावा बौद्धिक वर्कर के उपयोग से मृदा की उत्पादन क्षमता बढ़ती है।

समाचार पत्र का नाम.....

दौन कृषि भास्कर

दिनांक..... ११. ११. २०१९ पृष्ठ सं..... ६ कॉलम..... १५.....

कृषि में बायोचर के उपयोग से मृदा की जलधारण क्षमता में ९.८२ प्रतिशत तक बढ़ोतरी : डॉ. जिंग

१९६० में विश्व की कुल जनसंख्या ३.०३ बिलियन, वर्तमान में बढ़कर हुई दोगुणा से ज्यादा, कृषि योग्य भूमि में हुई केवल १२ प्रतिशत की वृद्धि भविष्य में जल संरक्षण के लिए कृषि के लिए बायोचर का इस्तेमाल लाभदायक होगा।

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्वर्ण जयंती अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन न्यू मिलेनिया एग्रीकल्चर नॉवल ट्रेंडस एंड फ्यूचर सिनेरियो विषय पर ३ दिवसीय सम्मेलन शुरू हुआ। इसका शुभारंभ मुख्य अतिथि यूएसए के मेसाचूसेट विश्वविद्यालय के डॉ. बाओशेन जिंग ने दीप प्रज्वलित करके किया। सम्मेलन की अध्यक्षता एचएयू के कुलपति प्रो. केपी सिंह ने की।

डॉ. बाओशेन जिंग ने लंबे समय तक मृदा स्वास्थ्य को बनाए रखने व वर्तमान समय में हो रहे जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए बायोचर के महत्व के बारे में व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि १९६० में विश्व की कुल जनसंख्या ३.०३ बिलियन थी जोकि वर्तमान में दोगुणा से ज्यादा हो गई है। कृषि योग्य भूमि में सिर्फ १२ प्रतिशत की ही वृद्धि हुई। वर्तमान समय में प्राकृतिक संसाधनों पर मानव व पशु संख्या का भारी दबाव है इसके लिए खाद्य आपूर्ति करना कृषि वैज्ञानिकों के लिए एक चुनौती है।

बायोचर के महत्व पर दिए व्याख्यान में उन्होंने बताया कि कृषि में बायोचर के उपयोग से मृदा की जलधारण क्षमता में ९.८२ प्रतिशत तक बढ़ोतरी पाई गई है जिससे यह सिद्ध होता है कि भविष्य में जल संरक्षण के लिए कृषि तकनीक में बायोचर का इस्तेमाल लाभदायक साबित होगा। बायोचर के उपयोग से मृदा की उत्पादन क्षमता बढ़ती है व मृदा से पौधों को होने वाली पोषक तत्वों की उपलब्धता भी बढ़ती है। बायोचर के इस्तेमाल से ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में भी कमी आती है। अतः यह तकनीक वायु व मृदा के प्रदुषण से भी निपटने में सहायक होगी।



एचएयू में कृषि में बायोचर के इस्तेमाल के महत्व पर चल रही कॉन्फ्रेंस में विभिन्न देशों से आए वैज्ञानिक।



बायोचर के महत्व के बारे में अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते डॉ. बाओशेन जिंग।

देश के खाद्य भंडार में प्रदेश का १७% योगदान

प्रो. केपी सिंह ने बताया कि हरियाणा प्रदेश का क्षेत्रफल देश के कुल क्षेत्रफल का १.३४ प्रतिशत है। देश के खाद्य भंडार में हरियाणा का १७ प्रतिशत योगदान है। इन्होंने बड़े योगदान का श्रेय उन्होंने हरियाणा प्रदेश के मेहनती किसानों व कृषि वैज्ञानिकों को दिया।

उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र में आ रही चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए कृषि शिक्षा व कृषि शोध में उपयुक्त बदलाव करने होंगे, ताकि किसानों के समक्ष आ रही समस्याओं का समाधान किया जा सके व स्थानीय स्तर पर आ रही चुनौतियों से वैश्वक दृष्टिकोण के हिसाब से निपटा जा सके।



३ दिवसीय सम्मेलन आरंभ। एचएयू में कार्यक्रम के दौरान मौजूद वीवी प्रो. केपी सिंह व अन्य।

देश-विदेश से आए १००० शोध पत्रों में से गुणवत्ता व उचित मापदंडों के आधार पर ६३४ चुने व लबणीयता को सहन करने वाली किस्में विकसित करने पर बल दिया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्ण ढोड़ीजी प्रो. गजेंद्र ने भविष्य में बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए खाद्य आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए कृषि शिक्षा एवं शोध की महत्वा पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि देश में करीब ८०० विश्वविद्यालयों में से ७१ कृषि विश्वविद्यालय हैं, जिनमें होने वाले शोध कार्यों से कृषि क्षेत्र में आने वाली चुनौतियों का समाधान करने में मदद मिलेगी।

प्रो. केपी सिंह बताया कि इस सम्मेलन के लिए देश-विदेश के करीब १००० शोधार्थियों व वैज्ञानिकों ने अपने शोध पत्र भेजे व आवेदन किया जिनमें से कमेटी ने गुणवत्ता व उचित मापदंडों के आधार पर ६३४ शोधपत्रों को स्वीकार किया गया। सम्मेलन में २० देश के लागतग १०० विदेशी प्रतिनिधियों ने पंजीकरण करवाया जोकि सम्मेलन में अपने शोध पत्र भी प्रस्तुत करेंगे। कुलपति ने बताया कि इस सम्मेलन में विश्वविद्यालय के शोध छात्रों व वैज्ञानिकों को अन्य विश्वविद्यालय

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम.....

उजाला

दिनांक ७. ११. २०१९

पृष्ठ सं ३

कॉलम १-४

बायोचर के इस्तेमाल से मिट्टी की जलधारण क्षमता में हुई 9.82 % की बढ़ोतरी : डॉ. जिंग एचएयू में न्यू मिलेनिया एग्रीकल्चर नॉवेल ट्रैड्स एंड फ्यूचर सिनेरियो विषय पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन शुरू हुआ।

सम्मेलन का शुभारंभ मुख्य अतिथि यूएसे के मैसाचुसेट्स विश्वविद्यालय के डॉ. बाओशेन जिंग ने दोप प्रज्ञवित कर किया। सम्मेलन की अध्यक्षता एचएयू के कुलपति प्रो. केपी सिंह ने की।

अमर उजाला ब्लूरो

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में बुधवार को न्यू मिलेनिया एग्रीकल्चर नॉवेल ट्रैड्स एंड फ्यूचर सिनेरियो विषय पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन शुरू हुआ। सम्मेलन का शुभारंभ मुख्य अतिथि यूएसे के मैसाचुसेट्स विश्वविद्यालय के डॉ. बाओशेन जिंग ने दोप प्रज्ञवित कर किया। सम्मेलन की अध्यक्षता एचएयू के कुलपति प्रो. केपी सिंह ने की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. बाओशेन जिंग ने लंबे समय तक मृदा स्वास्थ्य को बनाए रखने व वर्तमान समय में हो रहे जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए बायोचर के महत्व के बारे में व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि 1960 में विश्व की कुल जनसंख्या 3,03 बिलियन थी जो वर्तमान में दोगना से ज्यादा हो गई है, जबकि कृषि योग्य भूमि में सिर्फ 12 प्रतिशत की ही वृद्धि हुई। वर्तमान समय में प्राकृतिक संसाधनों पर मानव व पशु संख्या का भारी दबाव है, जिसके लिए खाद्य आपूर्ति करना कृषि वैज्ञानिकों के लिए एक चुनौती है।

उन्होंने बताया कि कृषि में बायोचर के उपयोग से मृदा की जलधारण क्षमता में 9.82 प्रतिशत तक बढ़ोतरी पाई गई है, जिससे यह मिठ्ठा होता है कि भविष्य में जल संरक्षण के लिए कृषि तकनीक में बायोचर का इस्तेमाल लाभदायक सवित्र



एचएयू में आयोजित अंतरराष्ट्रीय कृषि सम्मेलन में मौजूद विदेशी प्रतिनिधि व अन्य।

सम्मेलन में 100 विदेशी प्रतिनिधि प्रस्तुत करेंगे शोध पत्र

प्रो. केपी सिंह ने बताया कि हरियाणा प्रदेश का क्षेत्रफल देश के कुल क्षेत्रफल का 1.34 प्रतिशत है जबकि देश के खाद्यान भंडार में हरियाणा का 17 प्रतिशत योगदान है। उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र में आ रही चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए कृषि शिक्षा व कृषि शोध में उपयुक्त बदलाव करने होंगे ताकि किसानों के सम्बद्ध आ रही समस्याओं का समाधान किया जा सके व स्थानीय स्तर पर आ रही चुनौतियों से वैश्विक वृद्धिकोण के हिसाब से निपटा जा सके। उन्होंने बताया कि सम्मेलन में 20 देशों के लगभग 100 विदेशी प्रतिनिधियों ने पंजीकरण करवाया जो सम्मेलन में अपने शोध पत्र भी प्रस्तुत करेंगे।

होगा। इसके अलावा बायोचर के उपयोग से मृदा की उत्पादन क्षमता बढ़ती है व मृदा से पौधों को होने वाली पोषक तत्वों

यह होता है बायोचर

कृषि वैज्ञानिकों के मूलाधिक बायोचर एक जैविक कार्बन का स्रोत है, जिसकी मदद से जमीन में कार्बन की कमी को पूरा किया जा सकता है। यह जमीन की उपजाऊ क्षमता को भी बढ़ाता है। जब किसी पौधे के अवशेष को औक्सीजन की अनुपस्थिति में उच्च तापमान में जलाया जाता है, तो जले हुए अवशेष प्राप्त होते हैं, उसे बायोचर कहा जाता है। किसान पराली का इस्तेमाल भी बायोचर बनाने में कर सकते हैं। कृषि वैज्ञानिकों के मूलाधिक विदेशों में इस पर रिसर्च चल रही है।

जलवायु परिवर्तन को सहन करने वाली किस्में करें विकसित

कनाडा के ग्लैफ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर कलेरेनस जे सॉवेटन ने बताया कि समय के साथ जलवायु में परिवर्तन आ रहे हैं, जिसमें मुख्यतः बढ़ती हुई गर्मी व बर्षा की अनिश्चितता भी है। ऐसे में हमें एसी फसलों की ऐसी किसानों को विकसित करना होगा हो जलवायु में आने वाले बदलाव को सहन कर सके। उन्होंने सूखे व लवणीयता को सहन करने वाली किस्में विकसित करने पर बल दिया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व डॉडीजी प्रो. गंडें ने अपने संबोधन में भविष्य में बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए खाद्यान आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए कृषि शिक्षा एवं शोध की महत्व पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि देश में लगभग 800 विश्वविद्यालयों में से 71 कृषि विश्वविद्यालय हैं जिनमें होने वाले शोध कार्यों से कृषि क्षेत्र में आने वाली चुनौतियों का समाधान करने में मदद मिलेगी। इस दौरान एक स्मारिका व शोध पत्र पुस्तिका का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक व सम्मेलन के आयोजन सचिव डॉ. एसके कमर्चारी व विद्यार्थी उपस्थित थे।

के उत्सर्जन में भी कमी आती है। अतः अपने व्याख्यान में यह भी बताया कि यह तकनीक बायु व मृदा के प्रदूषण से बायोचर के इस्तेमाल से ग्रीन हाउस गैसों भी निपटने में सहायक होगी।

समाचार पत्र का नाम.....

पंजाब के सरी

दिनांक..... ७. ११. २०१९

पृष्ठ सं..... २

कॉलम..... १-४

हकूमि में ३ दिवसीय सम्मेलन शुरू, २० देशों के प्रतिनिधि पहुंचे

जलवायु अनुसार फसलों की किस्में विकसित करने पर जोर दिया, कृषि क्षेत्र में चुनौतियों से निपटने के लिए शिक्षा व शोध कार्य में बदलाव करने होंगे: प्रो. सिंह



सम्मेलन में मंच पर मौजूद मुख्यातिथि, कुलपति व प्रतिभागी एवं सम्मेलन में मौजूद वैज्ञानिक।

हिसार, ६ नवम्बर (ब्यूरो): चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में स्वर्ण जयंती अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (गोल्डन जुबली इंटरनेशनल कॉर्फ्स) न्यू मिलेनिया प्रॉग्राम्सिट चरण नॉवल ट्रेंड एंड प्लूचर सिनेरियो विषय पर ३ दिवसीय सम्मेलन आरंभ हुआ। सम्मेलन का शुभारंभ मुख्यातिथि यू.एस.ए. के मेसान्यूसेट विश्वविद्यालय के डा. बाओशेन जिंग ने दीप प्रज्ञालित करके किया। सम्मेलन की अध्यक्षता चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. के.पी. सिंह ने की।

कार्यक्रम के मुख्यातिथि व वर्ष 2014 के सबसे ज्यादा महाइंड्र प्रख्यात वैज्ञानिक डा. बाओशेन जिंग ने लंबे समय तक मृदा स्वास्थ्य को बनाए रखने व वर्तमान समय में हो रहे जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए बायोचर के महत्व के बारे में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि 1960 में विश्व की कुल जनसंख्या

३.०३ बिलियन थी जोकि वर्तमान में दोगुणा से ज्यादा हो गई है जबकि कृषि योग्य भूमि में सिर्फ १२ प्रतिशत की ही वृद्धि हुई।

वर्तमान समय में प्राकृतिक संसाधनों पर मानव व पशु-संख्या का भारी दबाव है जिसके लिए खाद्य आपूर्ति करना कृषि वैज्ञानिकों के लिए एक चुनौती है। बायोचर के महत्व पर दिए व्याख्यान में उन्होंने बताया कि कृषि में बायोचर के उपयोग से मृदा की जलधारण क्षमता में ९.८२ प्रतिशत तक बढ़ाती पाई गई है जिससे यह सिद्ध होता है कि भविष्य में जल संरक्षण के लिए कृषि तकनीक में बायोचर का इस्तेमाल लाभदायक सवित होगा।

प्रो. के.पी. सिंह ने बताया कि हरियाणा का क्षेत्रफल देश के कुल क्षेत्रफल का १.३४ प्रतिशत है जबकि देश के खाद्यान भंडार में हरियाणा का १७ प्रतिशत योगदान है। उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र में आरही चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए कृषि शिक्षा

व कृषि शोध में उपयुक्त बदलाव करने होंगे ताकि किसानों के समक्ष आरही समस्याओं का समाधान किया जा सके।

उन्होंने बताया कि इस सम्मेलन के लिए देश-विदेश के करीब 1000 शोधाधियों व वैज्ञानिकों ने अपने शोध पत्र भेजे व आवेदन किया जिनमें से कमेटी ने गुणवत्ता व उत्तित मापदंडों के आधार पर 634 शोधविदों को स्वीकार किया गया। सम्मेलन में २० देशों के लगभग 100 विदेशी प्रतिनिधियों ने पंजीकरण करवाया।

कनाडा के ग्वेलफ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर कलेरेनस जे स्वेंटन ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए बताया कि समय के साथ जलवायु में परिवर्तन आ रहे हैं, जिसमें मुख्यत बढ़ती हुई गर्मी व बर्बादी की अनिश्चितता भी है, ऐसे में हमें ऐसी फसलों की ऐसी किस्मों को विकसित करना होगा हो जलवायु में आने वाले बदलाव को सहन कर सकें। उन्होंने सुखे व लवणीयता

को सहन करने वाली किस्में विकसित करने पर बल दिया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व डी.डी. जी. प्रौ. गजेंद्र ने अपने संबोधन में भविष्य में बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए खाद्यान आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए कृषि शिक्षा एवं शोध की महत्व पर जोर दिया।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक व सम्मेलन के आयोजन सचिव डा. एस.के. सहरावत ने सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया व कृषि अभियांत्रिकी व तकनीकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. आर.के. झोरड़ ने धन्यवाद प्रस्ताव जापित किया। सम्मेलन में मंचासीन मुख्यातिथि, कुलपति व अन्य विश्व अतिथियों ने सूचनर व शोध पत्र पुस्तिका का विमोचन किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के ओ.एस.डी., रजिस्ट्रार, डीन, डायरेक्टर, विभागाध्यक्ष, वैज्ञानिक, अधिकारी, कर्मचारी व विद्यार्थी उपस्थित थे।



समाचार पत्र का नाम

दिनांक २०.११.२०१९ पृष्ठ सं १५ कॉलम ५४

खाद्य आपूर्ति वैज्ञानिकों के लिए चुनौती : डॉ. जिंग

हरिभूमि न्यूज में हिसार

यूएसए के मेसा यूसेट विश्वविद्यालय के डॉ. बाओशेन जिंग ने कहा कि वर्तमान समय में प्राकृतिक संसाधनों पर मानव व पशु संख्या का भारी दबाव है जिसके लिए खाद्य आपूर्ति करना कृषि वैज्ञानिकों के लिए एक चुनौती है।

डॉ. जिंग हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में बुधवार को शुरू हुए तीन दिवसीय स्वर्ण जयती अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। न्यू मिलेनिया एग्रीकल्चर नॉवल ट्रेडस एंड फूचर सिनेरियो विषय पर आयोजित सम्मेलन की अध्यक्ष हक्कीवि के कुलपति प्रो. केपी सिंह ने की। प्रख्यात वैज्ञानिक डॉ. बाओशेन जिंग ने लंबे समय तक मृदा स्वास्थ्य को बनाए रखने व वर्तमान समय में हो रहे जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए बायोचर के महत्व के बारे में अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

उन्होंने बताया कि 1960 में विश्व की कुल जनसंख्या 3.03 बिलियन थी जोकि वर्तमान में दोगुण से ज्यादा हो गई है जबकि कृषि योग्य भूमि में सिर्फ 12 प्रतिशत की ही वृद्धि हुई। प्राकृतिक संसाधनों पर मानव व पशु संख्या का भारी दबाव है। ऐसे में खाद्य आपूर्ति करना कृषि वैज्ञानिकों के लिए एक चुनौती है। बायोचर के महत्व पर दिए व्याख्यान में उन्होंने बताया कि कृषि में



हिसार। सम्मेलन में शोध पत्र पुस्तका का विमोचन करते मुख्य अतिथि डॉ. बाओशेन जिंग।

फोटो : हरिभूमि

बायोचर के उपयोग से मृदा की जलधारण क्षमता में 9.82 प्रतिशत तक बढ़ोतारी पाई गई है जिससे यह सिद्ध होता है कि भविष्य में जल संरक्षण के लिए कृषि तकनीक में बायोचर का इस्तेमाल लाभदायक साबित होगा।

सूखे व लवणीयता को सहन करने वाली किसिंगों पर जोर टें : सर्वेंट

कनाडा के ग्वेल्फ विश्वविद्यालय के प्रो. क्लेरेनस जे सर्वेंट ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए बताया कि समय के साथ जलवायु में परिवर्तन आ रहे हैं जिसमें मुख्यत बढ़ती हुई गर्मी व वर्षा की अनिश्चित भी है, ऐसे में हमें ऐसी फसलों की ऐसी किसी को विकसित करना होगा हो जलवायु में आने वाले बदलाव को सहन कर सकें। उन्होंने

कृषि शिक्षा व शोध में बदलाव की जल्दत : प्रो. सिंह

समारोह में हक्कीवि कुलपति प्रो. के पी. सिंह ने बताया कि हरियाणा प्रदेश का क्षेत्रफल देश के कुल क्षेत्रफल का 1.34 प्रतिशत है जबकि देश के खाद्यान्न भंडार में हरियाणा का 17 प्रतिशत योगदान है। इतने बड़े योगदान का श्रेय उन्होंने हरियाणा प्रदेश के महानी किसानों व कृषि वैज्ञानिकों को दिया। उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र में आ रही चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए कृषि शिक्षा व कृषि शोध में उपयुक्त बदलाव करने होंगे ताकि किसानों के समक्ष आ रही समस्याओं का समाधान किया जा सके तथा स्थानीयस्तर पर आ रही चुनौतियों से वैश्विक दृष्टिकोण के हिसाब से निपटा जा सके।

सूखे व लवणीयता को सहन करने वाली किसी विकसित करने पर बल दिया।

कृषि शिक्षा एवं शोध की महत्वा पर जोर

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व डीडीजी प्रो. गजेन्द्र ने भविष्य में बढ़ती जनसंख्या के लिए खाद्यान आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए कृषि शिक्षा एवं शोध की महत्वा पर जोर दिया। विश्वविद्यालय

के अनुसंधान निदेशक एवं सम्मेलन के आयोजन सचिव डॉ. एसके. सहरावत ने सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया।

कृषि अभियांत्रिकी व तकनीकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. आरके झोरड़ ने धन्यवाद प्रस्ताव जापित किया। सम्मेलन में मंचासीन मुख्य अतिथि, कुलपति तथा अन्य विशिष्ट अतिथियों ने सूचनिर तथा शोध पत्र पुस्तका का विमोचन किया।

लोक संपर्क कार्यालय

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम.....

श्रीनिक जागरण

दिनांक ७. ११. २०१९ पृष्ठ सं ।५ कॉलम ।-६

सम्पेत

एचएयू में तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में वैज्ञानिकों ने कृषि क्षेत्र की आगामी घुनौतियों पर रखे विचार

वैज्ञानिकों की रिसर्च में पर्यावरण बदलाव फसलों के लिए एक बड़ी चिंता

जगद्दण गंधारवदाता, हिसार : हरियाणा

कृषि विज्ञानिकों द्वारा विज्ञान में वृक्षज्ञान को लेने दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोग रहा हुआ। इसमें मुख्य अतिथि अमेरिका की वैज्ञानिकों संटी और वैज्ञानिकों के वैज्ञानिक वायोमिंग विश्व विद्यालय प्रो. केरी स्टिल ने भी। वृक्षज्ञान को दिवसीय वैज्ञानिकों ने कृषि के खेत में आगामी चुनौतियों को माझ किया, जिसमें अधिकांश वैज्ञानिकों को सिंहच पर्यावरण बदलाव का कलात्मक पर अपर पर आवारी रखी। इन रिसर्च में ऐसे तथ्य सम्बन्ध आए हैं कि पर्यावरण बदलाव लकड़ार फसलों पर दूषकारी गोड़ रहा है। इन वैज्ञानिकों से मुख्यतः कृषि वैज्ञानिकों ने ऐसे फसलों को विवरित करने पर बल दिया और तथ्यात्मक पर्यावरण में भी अधिक धृतिगत दर्शक।

कृषि शोध में बदलाव की दबावार : दूषकारी के कुरुक्षेत्र प्रो. केरी



सम्मेलन के दैनन्दिन उपस्थिति विदेश से आए प्रैक्टिशर्ट वैज्ञानिक विद्यार्थी । जगद्दण

हजार शैघंवियों के 634 शोधपत्र होंगे प्रस्तुत

इस सम्मेलन के द्वितीय विदेशी कार्यक्रम 1000 शोधपत्रों व वैज्ञानिकों ने अपने शोध पत्र भेजे और इनका विचार, जिनमें से कमेटी ने गुणवत्ता व उत्तिष्ठान के विषय पर 634 शोधपत्रों को स्वीकृत किया गया। साक्षरता में 20 दर्शी के लगभग 100 विदेशी प्रतिविधियों ने एकीकरण करतराया है। इस सम्मेलन में सिंहचलाव के शोध छान्दो व वैज्ञानिकों की अन्य विद्यि व विदेश के प्रदूषक वैज्ञानिकों से बाहरीत करने, सीढ़िने व उनके अनुभव लाइट करने का ऊबंधन भी मिलता। अद्योतक संवित डॉ. एस. के. लहरापति ने सभी प्रतिविधियों का स्वागत किया व कृषि अभियांत्रिकी व तकनीकी विश्वविद्यालय के अधिकारियों व डॉ. ओर. डॉ. ओर. ने पर्यावरण प्रस्तुत विधि किया। सम्मेलन में व्याकरण मुख्य अतिथि, कुरुक्षेत्र व अन्य वैज्ञानिकों ने मुख्यिन् व शोध पत्र पुस्तिका का विमोदन किया।

71 कृषि विधि को इस सम्मेलन से बिलंगी मदद

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के पूर्व विदेशी डॉ. जगद्दण न भी यह में इन्हीं दूषकारी के लिए तकनीक अनुसृत सुनिश्चित करने के लिए कृषि विज्ञान पर्यावरण की व्यवस्था पर जोर दिया। उन्होंने बताया देश में लगभग 800 विद्यि में से 71 कृषि विधि हैं जिनमें शोध कार्यों से कृषि क्षेत्र में ऐसे वाती हुनौतियों का समाधान करने में मदद मिलेगी।

हरियाणा प्रदेश के नेहनी किलोमीटरों व बोकलत देश के कुल क्षेत्रफल का 1.34 कृषि वैज्ञानिकों को दिया। उन्होंने बहा प्रतिविधि जारी किया था क्यानां चंडार कि कृषि क्षेत्र में आ रही चुनौतियों को तथ्यात्मक विवरण के लिए संवित जा सके।

इन्होंने बड़े योगदान कर लेय उन्होंने शोध में उपयुक्त बदलाव करने होंगे ताकि

किसानों के सम्बन्ध आ रही समस्याओं का समाधान किया जा सके व स्थानीय करत पर इन चुनौतियों से वैज्ञानिक वृद्धिकोष के लिए संवित जा सके। यद्यपि गर्भी और वर्षा की

अविनिश्चयता से ऐसे लाभें हैं, जिसकी कानून के न्यूनतम विश्वविद्यालय के लोकप्रिय कालेरीजन जै स्टीटेंट वेतनावाले जारी हैं। यह बदलाव रक्त के नहीं है लकड़ार जारी है, इसके लिए वैज्ञानिकों वो इस परिवर्तन के गोले खो जाएं होंगी।

लोक संपर्क कार्यालय

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम प्रौद्योगिक जागरूकता, अभास उजाता
 दिनांक २१. २०१९ पृष्ठ सं १६, ६ कॉलम ७-८, ८-९

एचएयू के स्वयंसेवकों ने बताए पराली जलाने के दुष्प्रभाव



प्रभातफेरी को झाड़ी दिखाकर रखना करते डॉ. देवेन्द्र सिंह दहिया । ० ज्ञानगण

हिसार : हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा पराली जलाने के दुष्प्रभावों से लोगों को जागरूक करने के लिए प्रभातफेरी का आयोजन किया गया । जिसमें 300 स्वयंसेवकों ने भाग लिया । प्रभातफेरी को विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशक डॉ. देवेन्द्र सिंह दहिया ने रखाना किया । प्रभातफेरी विश्वविद्यालय के पुराने परिसर दो नंबर गेट, बालसमंद रोड से मलिक चौक, प्रेम नगर, प्रीती नगर से होते हुए वापस विश्वविद्यालय

में पहुंची । यह प्रभातफेरी डॉ. प्रियंका के नेतृत्व में निकाली गई । इस दैरान विद्यार्थियों ने पराली जलाने से होने वाले दुष्प्रभावों के बारे व फसल अवश्यों के उचित प्रबंधों के बारे में लोगों को अवगत कराया । इसके अलावा विद्यार्थियों के लिए पोस्टर व स्लोगन प्रातियोगिता भी करवाई गई । इस अवसर पर सह छात्र कल्याण निदेशक (खेल), डॉ. सुशील लेंगा, राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी डॉ. भगत सिंह तथा विभिन्न खेलों के कोच उपस्थित रहे । (जर्जर)

एचएयू की एनएसएस इकाई ने निकाली प्रभातफेरी

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा फसल के दुष्प्रभावों से लोगों को जागरूक करने के लिए प्रभातफेरी का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 300



स्वयंसेवकों ने भाग लिया । प्रभातफेरी को विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशक डॉ. देवेन्द्र सिंह दहिया ने झाड़ी दिखा कर रखाना किया । प्रभातफेरी विश्वविद्यालय के पुराने परिसर दो नंबर गेट, बालसमंद रोड से मलिक चौक, प्रेम नगर, प्रीती नगर से होते हुए वापस विश्वविद्यालय पहुंची । प्रभातफेरी के दौरान विद्यार्थियों ने पराली जलाने से होने वाले दुष्प्रभावों के बारे व फसल अवश्यों के उचित प्रबंधों बारे लोगों को अवगत कराया । इसके अलावा विद्यार्थियों के लिए पोस्टर व स्लोगन प्रातियोगिता का भी आयोजन किया गया । यह प्रभातफेरी डॉ. प्रियंका के नेतृत्व में निकाली गई । इस अवसर पर छात्र कल्याण महानिदेशक (खेल) डॉ. सुशील लेंगा, राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी डॉ. भगत सिंह और विभिन्न खेलों के कोच उपस्थित थे ।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम.....

~~प्रैन्टेड मिल्यून~~

दिनांक..... ११. २०१९ पृष्ठ सं.... ७ कॉलम..... ८.....

हकूमि के स्वयंसेवकों ने निकाली प्रभात फेरी

हिसार (निस) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा फसल के अवशेष जलाने से होने वाले दुष्प्रभावों के बारे में लोगों को जागरूक करने के लिए प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। हकूमि द्वारा निकाली गई प्रभात फेरी में 300 के आसपास स्वयंसेवकों ने भाग लिया। प्रभात फेरी को विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशक डॉ. देवेन्द्र सिंह दहिया ने झंडी दिखा कर रवाना किया और प्रभात फेरी विश्वविद्यालय के पुराने परिसर 2 नंबर गेट, बालसमंद रोड से मलिक चौक, प्रेम नगर, प्रीती नगर से होते हुए वापस विश्वविद्यालय पहुंची। प्रभात फेरी के दौरान विद्यार्थियों ने पराली जलाने से होने वाले दुष्प्रभावों के बारे और फसल अवशेषों के उचित प्रबंधों के बारे में लोगों को अवगत कराया। इसके अलावा विद्यार्थियों के लिए पोस्टर व स्लोगन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। यह प्रभात फेरी डॉ. प्रियंका के नेतृत्व में निकाली गई।

लोक संपर्क कार्यालय

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम.....

सिटी पल्स

दिनांक..... ६. ११. २०१९ पृष्ठ सं..... २ कॉलम.... । - ५

फसल के दुष्प्रभावों से जागरूक करने के लिए विद्यार्थियों ने निकाली प्रभात फेरी

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की गट्टीय सेवा योजना द्वारा फसल के दुष्प्रभावों से लोगों को जागरूक करने के लिए प्रभात फेरी का आयोजन किया गया जिसमें 300 स्वयंसेवकों ने भाग लिया। प्रभात फेरी को विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशक डॉ. देवेन्द्र सिंह दहिया ने झंडी दिखाकर रवाना किया।

प्रभात फेरी विश्वविद्यालय के पुराने परिसर दो नंबर गेट, बालसमंद रोड से मलिक चौक, प्रेम नगर, प्रीती नगर से होते हुए वापिस विश्वविद्यालय पहुंची। प्रभात फेरी के दैरण विद्यार्थियों ने पराली जलाने से होने वाले दुष्प्रभावों के बारे व फसल अवशेषों के उचित प्रबंधों बारे लोगों को अवगत कराया। इसके अलावा विद्यार्थियों के लिए पोस्टर व स्लोगन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। यह प्रभात फेरी डॉ. प्रियंका



हिसार। डॉ. देवेन्द्र सिंह दहिया प्रभात फेरी को झंडी दिखाकर रवाना करते हुए।

के नेतृत्व में निकाली गई। निदेशक (खेल), डॉ. मुशील लेगा, डॉ. भगत सिंह तथा विभिन्न खेलों के इस अवसर पर सह छात्र कल्याण गट्टीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी कोच उपस्थित थे।

लोक संपर्क कार्यालय

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम..... नित्य शान्ति इमेज
दिनांक... 6. 11. 2019 पृष्ठ सं.... 3 कॉलम.... ५

दुष्प्रभावों से जागरूक करने के लिए प्रभात फेरी का आयोजन



हिसार, 6 नवम्बर (निस)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा फसल के दुष्प्रभावों से लोगों को जागरूक करने के लिए प्रभात फेरी का आयोजन किया गया जिसमें 300 स्वयंसेवकों ने भाग लिया। प्रभात फेरी को विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशक डॉ. देवेन्द्र सिंह दहिया ने झँडी दिखा कर रखाना किया। प्रभात फेरी विश्वविद्यालय के पुराने परिसर दो नंबर गेट, बालसमंद रोड से मलिक चौक, प्रेम नगर, प्रीती नगर से होते हुए वापिस विश्वविद्यालय पहुंची। प्रभात फेरी के दौरान विद्यार्थियों ने पराली जलाने से होने वाले दुष्प्रभावों के बारे व फसल अवशेषों के उचित प्रबंधों बारे लोगों को अवगत कराया। इसके अलावा विद्यार्थियों के लिए पोस्टर व स्लोगन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। यह प्रभात फेरी डॉ. प्रियंका के नेतृत्व में निकाली गई। इस अवसर पर सह छात्र कल्याण निदेशक (खेल), डॉ. सुशील लेगा, राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी डॉ. भगत सिंह तथा विभिन्न खेलों के कोच उपस्थित थे।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम.....

जून के मासका

दिनांक 7. 11. 2017 पृष्ठ सं. 2 कॉलम 1-4

एचएयू में 10 हजार से ज्यादा फ्लावर प्लांट्स तैयार, ₹ 1 में मिलेगा एक पौधा

नवंबर के दूसरे हफ्ते के अंत से शहरवासी खरीद सकेंगे प्लांट्स

सिटी रिपोर्टर • एचएयू कैपस अपनी ग्रीनरी के लिए पहचाना जाता रहा है। इसके साथ ही कैपस का प्रयास पूरे शहर को ग्रीन बनाकर रखना भी है। इसी कड़ी में कैपस में विंटर सीजन के लिए फ्लावर्स प्लांट्स की पौधे तैयार की जाती हैं।

इस बार पिछली सालों की अपेक्षा अधिक पौधे तैयार किए गए हैं। जिसमें उनका प्रयास है कि हर शहरवासी विंटर सीजन को नए पौधों और ग्रीनरी के साथ एंजॉय करें।

एचएयू के गेट नंबर 4 के पास सेंटर फॉर क्वालिटी प्लांटिंग मैटेरियल में बने एग्री टूरिज्म सेंटर में इस बार 10 हजार से भी ज्यादा फ्लावर और डेकोरेटिव प्लांट्स तैयार किए जा रहे हैं। बोटेनिकल गार्डन से साइटिस्ट ने बताया कि लगभग सारे प्लांट्स तैयार हो चुके हैं। एक रुपए में एक पौधा लाग खरीद सकते हैं।



नवंबर के दूसरे हफ्ते से शुरू कर सकते हैं प्लांटिंग

एग्री टूरिज्म सेंटर के इंचार्ज साइटिस्ट अरविंद मलिक ने बताया कि नवंबर के दूसरे हफ्ते से प्लांटिंग की जा सकती है। यह पौधे 3 से 4 हफ्ते में तैयार की गई है। नवंबर के दूसरे हफ्ते के अंत में शहरवासियों को देना शुरू किया जाएगा। यूनिवर्सिटी टाइमिंग 9 से 5 बजे तक इन्हें सेल किया जाएगा।

ये पौधे होंगे खास :

- क्लेंडला • वरबैना
- पेपर फ्लावर • हॉली हॉक • स्वीट अलाइस्म
- कॉर्न फ्लावर • पॉपी • कैंडी टप्ट



मिट्टी लेवल इंजिनियरिंग के साथ हर पौधे के बीच में हो 25 से 30 सेमी की दूरी

साइटिस्ट अरविंद मलिक ने बताया कि हर साल शहरवासी बड़ी मात्रा में पौधे खरीदते हैं। मगर उचित तरीके से प्लांटिंग ना करने पर पौधे बचते नहीं हैं या फ्लोरिंग सही नहीं होती। इसके लिए जरूरी है कि नवंबर के दूसरे हफ्ते में प्लांटिंग की जाए। पौधों के बीच में 25 से 30 सेमी की दूरी जरूरी है। एक ही जगह बहुत सारे पौधे नहीं लगाने चाहिए।